लिउवाडन, नीदरलैण्ड्स
१६ जून, २००६

संदेश संख्या – १७०

परमभूमि, परमधाम

व्यक्ति के अन्तर–अस्तित्व की असीम गहराई में शायद एक भूमि है जहाँ प्रकाश नहीं होता और अंधकार भी नहीं; जहाँ नश्वर अनश्वर है और अनश्वर नश्वर; जहाँ करुणा क्रूरता प्रतीत होती है और प्रचण्डता अत्यन्त सौम्य; जहाँ प्रेम कठोर है और निन्दा अत्यधिक प्रिय; जहाँ सद्‌गुण हिंसा है और अहिंसा पाखण्ड; जहाँ बनावटी एवं दिखावटी सुख जिसमें धार्मिक, सामाजिक, वैचारिक, बौद्धिक, लोकोपकारी, मिसनरी, योग एवं ईसाइयत संबंधी गतिविधियों से उत्पन्न सुख शामिल है, के संवर्धन द्वारा भय को स्थायी नहीं बनाया जाता; जहाँ आनन्द बोध अनुभव नहीं बनता; जहाँ दुःखभोग पवित्र होता है; जहाँ छवियों एवं मुखौटों के रूप में मानसिक अवशेषों एवं अवसादों का अस्तित्व नहीं होता; जहाँ मिथ्या द्वैत में फँसना सम्भव नहीं होता; जहाँ केवल भगवत्ता ही बोल सकता है – ''मैं हूँ''; जहाँ केवल गतिहीन गतिशीलता ही ध्यान है; जिसमें ब्रह्माण्ड, अचल किन्तु चलानेवाला, भी गहरे ध्यान में है; जहाँ ध्यान के बहाने जानबूझकर तुच्छ एवं घटिया प्रलाप करने का कोई प्रयोजन नहीं होता; जहाँ ध्यान के नाम पर आध्यत्मिक–मंडी में बिकनेवाले मानसिक प्रदूषणों से व्यक्ति का कोई सम्बन्ध नहीं होता ।

इस भूमि का स्पर्श ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण है । उस स्पर्श के बाद भ्रमण, शिक्षण, रिट्रीट करना या संदेश लिखना भी बचकाना प्रतीत हो सकता है । ईश्वर के लिए, इस 'स्पर्श' के प्रति उपलब्ध हों ।

न तद्‌भासयते सूर्यो
न शशांको न पावकः
यद्‌गत्वा न निवर्तन्ते
तद्‌धाम परमं मम ।।

।। जय स्पर्श ।।